

डैनियल की पुस्तक - संख्या पचासी

भविष्यसूचक यात्रा का अनावरण: ऐतिहासिक मील के पत्थरों का दैवीय संबंध

Jeff Pippenger

2024-02-18

1863 के विद्रोह के एक सौ छब्बीस वर्ष बाद, 1989 में दानियेल के ग्यारहवें अध्याय के अंतिम छह पदों की मुहर खुल गई। उसी वर्ष जो ज्ञान पहली बार अनावृत हुआ, वह पवित्र इतिहास की सुधार रेखाओं की पहचान था, और यह उद्घाटन कि वे सब एक-दूसरे के समानांतर हैं। फिर 1992 में, अंतिम छह पदों का प्रकाश खुलना शुरू हुआ। इन सत्यों की पहली सार्वजनिक प्रस्तुतियाँ 1994 में हुईं, और विषय 'सुधार रेखाएँ' था। 1996 में The Time of the End शीर्षक से एक पत्रिका प्रकाशित हुई, जिसमें दानियेल के ग्यारहवें अध्याय के अंतिम छह पदों की पहचान की गई।

1996 वह वर्ष था जब संदेश को औपचारिक रूप दिया गया। यह एक मार्गचिह्न है जो 1831 में विलियम मिलर के संदेश को औपचारिक रूप दिए जाने के समानांतर है। मिलर का संदेश न्याय के प्रारंभ की घोषणा था, और दानियेल 11 के अंतिम छह पद न्याय के समापन की घोषणा थे। मिलर के संदेश का विषय बाइबल में प्रकट किया गया भविष्यवाणी का समय था। दानियेल 11 के अंतिम छह पदों का विषय आधुनिक रोम (उत्तर का नकली राजा) था। मिलर को जो पद्धति प्रकट की गई, वह भविष्यवाणी की व्याख्या के उनके 14 नियम थे। 1989 में जो पद्धति प्रकट की गई, वह सुधार आंदोलनों की 'रेखा पर रेखा' थी।

मिलर के कार्य में परमेश्वर के वचन को अंतिम प्राधिकार के रूप में स्थापित करना शामिल था, जो उन पापाई परम्पराओं और रीति-रिवाजों के विपरीत था जो बारह सौ साठ वर्षों से संसार में प्रभावी रहे थे। इसी कारण, मिलर का संदेश पहली बार 1831 में प्रकाशित किया गया (इस प्रकार मिलर के संदेश को औपचारिक रूप दिया गया), ठीक किंग जेम्स बाइबल के प्रकाशन के दो सौ बीस वर्ष बाद। 'फ्यूचर फॉर अमेरिका' का कार्य था शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय पापसी के घातक घाव को चंगा करने में संयुक्त राज्य अमेरिका की भूमिका की पहचान करना। इसी कारण, 'द टाइम ऑफ द एंड' पत्रिका 1996 में प्रकाशित की गई (इस प्रकार संदेश को औपचारिक रूप दिया गया), ठीक 1776 में संयुक्त राज्य अमेरिका की स्थापना के दो सौ बीस वर्ष बाद।

प्रत्येक सुधार आंदोलन की विषय-वस्तु को एक ऐतिहासिक संदर्भ-बिंदु से जोड़ने वाले दो सौ बीस वर्षों की पहचान 11 सितंबर, 2001 के काफी बाद तक नहीं हुई, क्योंकि उसी तारीख को तीसरे "हाय" के आगमन के साथ ही प्रभु ने अपनी प्रजा को यिर्मयाह अध्याय छह, पद सोलह और सत्रह के "पुराने मार्गों" पर वापस ले आया। वहीं "सात बार" का प्रकाश पुनः खोजा गया, और जैसे-जैसे वह प्रकाश विकसित हुआ, यह स्पष्ट हुआ कि दो सौ बीस वही संख्या है जो दानियेल अध्याय आठ, पद 13 और 14 को जोड़ती है। पद तेरह में भविष्यवाणी के इतिहास के "chazon" दर्शन की पहचान की जाती है, और पद चौदह में "प्रकट रूप" के "mareh" दर्शन की पहचान की जाती है। इन दो पदों के बीच का संबंध ही वह बात थी जिसे गब्रियल दानियेल को सिखाने आया था, और दानियेल अंत के दिनों में परमेश्वर की उस प्रजा का प्रतिनिधित्व करता है जो उन दोनों दर्शनों के बीच के संबंध को समझती है।

तेरहवें पद का दर्शन 'सात काल' (पच्चीस सौ बीस वर्ष) का प्रतिनिधित्व करता है, और चौदहवें पद का दर्शन तेईस सौ दिन (वर्ष) का प्रतिनिधित्व करता है। यहूदा, यरूशलेम और पवित्रस्थान का प्रतिनिधित्व करने वाले यहूदा के दक्षिणी राज्य के विरुद्ध 'सात काल' 677 ईसा पूर्व में शुरू हुए, और यरूशलेम तथा पवित्रस्थान की पुनर्स्थापना को चिन्हित करने वाले तेईस सौ वर्ष 457 ईसा पूर्व में शुरू हुए।

दो सौ बीस वर्ष इन दोनों दर्शन को एक साथ बाँधते हैं, और संख्या दो सौ बीस को उस संबंध का प्रतीक माना गया, जिसके एक पक्ष में मूर्तिपूजा और पापाईवाद की उजाड़ने वाली शक्तियों द्वारा सेना और पवित्रस्थान का रौंदा जाना है,

जिसे तितर-बितर और परमेश्वर के रोष के रूप में दर्शाया गया है। दो सौ बीस वर्ष ने पवित्रस्थान को रौंदने के शैतानी कार्य के दर्शन को उसी मंदिर की पुनर्स्थापना के ईश्वरीय कार्य के दर्शन से जोड़ दिया। इसलिए दो सौ बीस वर्ष एक ऐसा प्रतीक है जो एक पवित्र संबंध का प्रतिनिधित्व करता है।

जिस प्रकार Millerite आंदोलन 1863 के विद्रोह पर समाप्त हुआ, और फिर एक सौ छब्बीस वर्ष बाद तीसरे स्वर्गदूत का आंदोलन आया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि दोनों आंदोलनों को "seven times" (एक सौ छब्बीस) के प्रतीकवाद द्वारा जोड़ा गया था, उसी प्रकार दो सौ बीस वर्षों ने 1831 में Miller द्वारा बाइबल संदेश की स्थापना को 1611 में King James Bible के प्रकाशन से जोड़ा, और ठीक वैसे ही, उसी समयावधि ने Future for America को अमेरिका की शुरुआत से जोड़ा, क्योंकि उसी ने अमेरिका के अंत की पहचान की।

22 अक्टूबर, 1844 को वाचा का दूत अचानक उस मंदिर में आ पहुँचा, जिसे उसने 1798 से—जो पहले कोप का अंत था—1844 तक—जो अंतिम कोप का अंत था—छियालिस वर्षों में स्थापित किया था। मंदिर में उसके प्रवेश से पहले आधी रात की पुकार के आंदोलन में पवित्र आत्मा का उंडेला जाना हुआ था, जिसका पूर्वाभास मसीह के यरूशलेम में विजयी प्रवेश से कराया गया था। ये दो गवाह सिद्ध करते हैं कि जब अंतिम दिनों में आधी रात की पुकार का आंदोलन दोहराया जाएगा, तब मसीह एक लाख चवालीस हज़ार का मंदिर स्थापित कर चुका होगा। वे दो आंदोलन, जिनमें दस कुँवारियों के दृष्टान्त की आधी रात की पुकार पूरी होती है, परस्पर समानांतर हैं।

“मेरा ध्यान अक्सर दस कुँवारियों के दृष्टान्त की ओर दिलाया जाता है, जिनमें से पाँच बुद्धिमान थीं, और पाँच मूर्ख। यह दृष्टान्त अक्षरशः पूरा हुआ है और होगा, क्योंकि इसका विशेष अनुप्रयोग इसी समय के लिए है, और तीसरे स्वर्गदूत के सन्देश के समान, यह पूरा हुआ है और समय के अन्त तक वर्तमान सत्य बना रहेगा।”

Review and Herald, August 19, 1890.

मिलेराइटों का इतिहास (पहले स्वर्गदूत का आंदोलन) परमेश्वर की सामर्थ्य की बढ़ती हुई अभिव्यक्ति को दर्शाता है, जिसका आरंभ 1798 में दानियेल की पुस्तक की मुहर खुलने पर हुआ। यह सामर्थ्य तब और बढ़ी जब 11 अगस्त, 1840 को प्रकाशितवाक्य अध्याय दस का स्वर्गदूत उतरा। फिर 19 अप्रैल, 1844 की पहली निराशा आई, और अंततः 12 अगस्त, 1844 से आरंभ हुए एक्सेटर कैम्प मीटिंग में पवित्र आत्मा का उंडेला जाना आरंभ हुआ, जो 22 अक्टूबर, 1844 तक समस्त भूमि पर ज्वार की लहर की तरह फैलता रहा।

Future for America (तीसरे स्वर्गदूत का आंदोलन) का इतिहास परमेश्वर की शक्ति के बढ़ते हुए प्रकट होने का प्रतिनिधित्व करता है, जो 1989 में दानियेल की पुस्तक की मुहर खोले जाने से शुरू हुआ। यह शक्ति तब और बढ़ी जब 11 सितंबर, 2001 को प्रकाशितवाक्य अठारह का स्वर्गदूत उतरा। फिर 18 जुलाई, 2020 की पहली निराशा आई, जो अंततः पवित्र आत्मा के उंडेले जाने की ओर ले जाएगी, और वह पृथ्वी पर दावानल की तरह फैलता रहेगा, जब तक कि मिकाएल उठ खड़ा न हो जाए और मानव परीक्षाकाल समाप्त न हो जाए।

22 अक्टूबर, 1844 को कई भविष्यवाणियाँ पूरी हुईं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि जल्द आने वाले रविवार के कानून के समय फिर से कई भविष्यवाणियाँ पूरी होंगी। उन भविष्यवाणियों में से एक 'दर्शन का विलंब' है, जैसा कि हबक्कूक अध्याय दो में प्रस्तुत है। हबक्कूक का दूसरा अध्याय पहले और तीसरे स्वर्गदूतों के आंदोलनों के अनुभव का वर्णन करता है। दोनों आंदोलनों को सही बाइबलीय पद्धति पर एक बहस का सामना करना पड़ता है, जो आंदोलन के प्रतिनिधियों और उन पूर्व में चुने गए लोगों के बीच होती है जिन्हें बहस की प्रक्रिया के दौरान किनारे किया जा रहा होता है।

पहले स्वर्गदूत के इतिहास के प्रहरियों द्वारा जिसकी रक्षा की जानी थी, वह संदेश सच्चाइयों (मिलर के रत्न) की पहचान था, जिन्हें अंततः 1843 और 1850 के दो पवित्र चार्टों पर निरूपित किया गया। वाद-विवाद की प्रक्रिया में एक निराशा घटित होने वाली थी, जिसने दो विरोधी वर्गों से अलगाव को चिह्नित किया, और विश्वासयोग्यों को अधिक गहन समर्पण के लिए आह्वान किया।

तब हबक्कूक मूलभूत सत्तों के परीक्षण की प्रक्रिया में शामिल दो वर्गों के बीच का भेद बताता है। वह परीक्षण प्रक्रिया, जिसमें उन दो वर्गों के बीच की बहस भी शामिल थी जो 22 अक्टूबर, 1844 को शांत हो गई, ठीक वहीं समाप्त हुई जहाँ हबक्कूक का दूसरा अध्याय समाप्त होता है।

परन्तु प्रभु अपने पवित्र मंदिर में हैं; समस्त पृथ्वी उसके सामने मौन रहे। हबक्कूक 2:20.

प्रभु अचानक अपने मिलेराइट मंदिर में प्रवेश कर गए, और तब सारी पृथ्वी को मौन रहना था, क्योंकि प्रतिरूपात्मक प्रायश्चित्त का दिन आ पहुँचा था और मृतकों का न्याय आरंभ हो चुका था। हबक्कूक के अध्याय दो का भविष्यसूचक इतिहास 22 अक्टूबर, 1844 को समाप्त हुआ, और यीशु सदा अंत को आरंभ के साथ पहचानते हैं। पवित्रस्थान और सेना को दो हजार पाँच सौ बीस वर्षों तक पददलित किए जाने के दर्शन तथा पवित्रस्थान और सेना की पुनर्स्थापना के दर्शन—इन दो दर्शनों की शुरुआत साथ-साथ हुई, किंतु उनके बीच दो सौ बीस वर्षों का अंतर था; और जब वे समाप्त हुए, तो उन्हें समाप्त के रूप में चिन्हित किया गया—हबक्कूक अध्याय दो, पद बीस में।

जब शीघ्र आने वाला रविवार का क़ानून लागू होगा, तब कई भविष्यवाणियाँ पूरी होंगी। उन भविष्यवाणियों में से एक दर्शन का विलंब है, जैसा कि हबक्कूक अध्याय दो में प्रस्तुत किया गया है। हबक्कूक अध्याय दो पहले और तीसरे स्वर्गदूतों के आंदोलनों के अनुभव को रेखांकित करता है। दोनों आंदोलनों को सही बाइबिलीय पद्धति के संबंध में एक बहस का सामना करना पड़ता है, जो उस आंदोलन के प्रतिनिधियों और उस पूर्व चुनी हुई प्रजा के बीच होती है, जिन्हें बहस की प्रक्रिया के दौरान किनारे किया जा रहा होता है।

तीसरे स्वर्गदूत के इतिहास के पहरेदारों द्वारा जिसकी रक्षा की जानी है, वह संदेश उन सत्तों की पहचान है (मिलर के रत्न), जो अंततः 1843 और 1850 के दो पवित्र चार्टों पर दर्शाए गए थे। बहस की प्रक्रिया के दौरान एक निराशा हुई जिसने दो विरोधी वर्गों के बीच विभाजन को चिह्नित किया, और विश्वासयोग्यों के लिए अधिक गहन समर्पण का आह्वान किया। फिर हबक्कूक मूलभूत सत्तों की परीक्षा प्रक्रिया में सम्मिलित इन दोनों वर्गों के बीच का भेद चिन्हित करता है। वह परीक्षा प्रक्रिया, जिसे इन दोनों वर्गों के बीच हुए विवाद द्वारा दर्शाया गया था, शीघ्र आने वाले रविवार के कानून पर पूर्णतः समाप्त होगी, ठीक वहीं जहाँ हबक्कूक का दूसरा अध्याय समाप्त हुआ था।

परन्तु प्रभु अपने पवित्र मंदिर में हैं; समस्त पृथ्वी उसके सामने मौन रहे। हबक्कूक 2:20.

प्रभु अचानक एक लाख चवालीस हज़ार के मंदिर में प्रवेश करेंगे, और तब सारी पृथ्वी मौन हो जाएगी, क्योंकि प्रतिरूपात्मक प्रायश्चित्त का दिन जीवितों के न्याय तक पहुँच जाएगा। हबक्कूक के दूसरे अध्याय का भविष्यसूचक इतिहास शीघ्र आने वाले रविवार के कानून पर समाप्त होता है, और यीशु सदा किसी बात के अंत की पहचान उसकी शुरुआत के साथ करते हैं।

जीवितों का न्याय 11 सितम्बर, 2001 को आरंभ हुआ, परन्तु न्याय एक प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया परमेश्वर के घर से शुरू होती है, और फिर ऐसे बिंदु तक पहुँचती है जहाँ न्याय परमेश्वर के घर के बाहर वालों पर आता है। जब न्यूयॉर्क शहर की विशाल इमारतें गिरा दी गईं, तब वह न्याय आरंभ हुआ जिसका प्रतीक वह मुहर लगाने वाला स्वर्गदूत है जो यरूशलेम से होकर गुजरता है और उन पर एक चिह्न लगाता है जो कलीसिया में और देश में किए जाने वाले घृणित कर्मों के कारण कराहते और रोते हैं। शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय तक मसीह एक लाख चवालीस हज़ार का मंदिर खड़ा करने का कार्य पूरा कर चुका होगा, और विनाशक स्वर्गदूत यरूशलेम पर न्याय लेकर आएँगे।

एक लाख चवालीस हज़ार तब एक पताका के रूप में ऊँचे उठाए जाते हैं, और दूसरे झुंड के लिए जीवितों का न्याय आरम्भ होता है, जो दानियेल के ग्यारहवें अध्याय के इकतालीसवें पद में एदोम, मोआब और अम्मोन के पुत्रों के प्रधान द्वारा दर्शाया गया है।

चाहे पहले स्वर्गदूत के मिलरवादी आंदोलन पर विचार करें या तीसरे स्वर्गदूत के शक्तिशाली आंदोलन पर, सुधारवादी आंदोलन का संपूर्ण इतिहास सत्य के क्रमशः बढ़ते हुए प्रकाशन का प्रतिनिधित्व करता है, जो पवित्र आत्मा के उंडेले

जाने पर अपनी परिणति पर पहुँचता है। पवित्र आत्मा का उंडेला जाना अंतिम दिनों की भविष्यवाणियों का केंद्रबिंदु है। यही कारण है कि मूर्ख कुँवारियों के पास तेल नहीं होता और बुद्धिमान कुँवारियों के पास होता है। तेल ही वह वर्षा है।

वे कहते हैं, यदि कोई पुरुष अपनी पत्नी को छोड़ दे, और वह उससे अलग होकर किसी दूसरे पुरुष की हो जाए, तो क्या वह फिर उसके पास लौटेगा? क्या वह देश बहुत ही अशुद्ध न हो जाएगा? परन्तु तू ने तो बहुत से प्रेमियों के साथ वेश्या-गिरि की है; तौभी मेरे पास लौट आ, यहीवा की यह वाणी है। अपनी आँखें ऊँचे स्थानों की ओर उठा, और देख, कहाँ ऐसा स्थान है जहाँ तुझसे सहवास न किया गया हो। मार्गों में तू उनके लिये बैठती रही, जैसे मरुभूमि में कोई अरबी बैठता है; और तू ने अपनी वेश्यावृत्ति और अपनी दुष्टताओं से उस देश को अशुद्ध कर दिया है। इसलिए वर्षाएँ रोक दी गई हैं, और पिछली वर्षा नहीं हुई; और तेरा ललाट वेश्या जैसा निर्लज्ज रहा, तू लज्जित होना नहीं चाहती थी। क्या अब से तू मुझसे यह नहीं पुकारेगी, "मेरे पिता, तू मेरी युवावस्था का मार्गदर्शक है"? यिर्मयाह 3:1-4.

उस पद्यांश में (और सभी भविष्यद्वक्ता अंतिम दिनों के विषय में बोलते हैं), परमेश्वर यह पहचानते हैं कि उनकी प्रजा ने व्यभिचार किया है, यहाँ तक कि उनका ललाट वेश्या जैसा हो गया है। अंतिम दिनों की वेश्या पापाई सत्ता है, और ललाट जान-बूझकर किए गए निर्णय का प्रतीक है। अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा दुष्ट है, परन्तु परमेश्वर अंतिम बुलाहट दे रहे हैं, यद्यपि वे उस स्थिति तक पहुँच गए हैं जहाँ उन्होंने वेश्या के समान ही निर्णय कर लिया है। उन्होंने ऐसा चरित्र विकसित कर लिया है जो चौथी पीढ़ी द्वारा दर्शाया गया है, जहाँ वे सूर्य की उपासना करने के लिए तैयार हैं, जैसा कि यहजेकेल अध्याय आठ में चौथी पीढ़ी द्वारा दर्शाया गया है।

नैतिक अंधकार के बीच सच्चे प्रकाश के चमकने का समय आ गया है। तीसरे स्वर्गदूत का संदेश संसार भर में भेजा गया है, जो मनुष्यों को यह चेतावनी देता है कि वे अपने माथों पर या अपने हाथों में पशु का चिन्ह या उसकी प्रतिमा का चिन्ह न लें। इस चिन्ह को ग्रहण करना अर्थात् वही निर्णय करना जो पशु ने किया है, और उन्हीं विचारों का समर्थन करना, जो परमेश्वर के वचन के प्रत्यक्ष विरोध में हैं। जो कोई यह चिन्ह ग्रहण करता है, उसके विषय में परमेश्वर कहता है, 'वह भी परमेश्वर के प्रकोप की उस मदिरा को पिएगा, जो उसके रोष के प्याले में बिना मिलावट उंडेली गई है; और वह पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेमने के सामने आग और गंधक से यातना पाएगा।' Review and Herald, 13 जुलाई, 1897.

यिर्मयाह अंतिम दिनों के परमेश्वर के लोगों को इस रूप में पहचानते हैं कि वे पहले से ही व्यभिचारिणी का माथा लिए हुए हैं। वे पशु का चिह्न लेने के कगार पर हैं, क्योंकि वे "दुष्ट" हैं। अभी-अभी उद्भूत किए गए खंड में बहन व्हाइट आगे कहती हैं:

यदि सत्य का प्रकाश तुम्हारे सामने प्रस्तुत किया गया है, जो चौथी आज्ञा के सब्त को प्रकट करता है, और यह दिखाता है कि परमेश्वर के वचन में रविवार के पालन का कोई आधार नहीं है, और फिर भी तुम झूठे सब्त से चिपके रहते हो, उस सब्त को पवित्र मानने से इनकार करते हुए जिसे परमेश्वर 'मेरा पवित्र दिन' कहता है, तो तुम पशु का चिन्ह ग्रहण करते हो। यह कब होता है? - जब तुम उस फ़रमान की आज्ञा मानते हो जो तुम्हें रविवार के दिन काम छोड़कर परमेश्वर की आराधना करने का आदेश देता है, जबकि तुम जानते हो कि बाइबल में एक भी वचन ऐसा नहीं है जो यह दिखाए कि रविवार साधारण कामकाजी दिन के सिवा कुछ और है, तब तुम पशु का चिन्ह लेने के लिए सहमति देते हो और परमेश्वर की मुहर से इनकार करते हो। यदि हम यह चिन्ह अपने माथे पर या अपने हाथ में प्राप्त करें, तो अवज्ञाकारियों के विरुद्ध घोषित किए गए दण्ड हमारे ऊपर अवश्य आएंगे। परन्तु जीवित परमेश्वर की मुहर उन पर लगाई जाती है जो विवेकपूर्वक प्रभु के सब्त का पालन करते हैं।

'और परमेश्वर ने देखा कि मनुष्य की दुष्टता पृथ्वी पर बहुत बढ़ गई थी, और उसके हृदय के विचारों की हर कल्पना निरंतर केवल बुराई ही थी.... पृथ्वी भी परमेश्वर के सामने भ्रष्ट हो गई थी, और पृथ्वी हिंसा से भर गई थी.... और परमेश्वर ने नूह से कहा, सब प्राणियों का अंत मेरे सामने आ पहुँचा है; क्योंकि पृथ्वी उनके कारण हिंसा से भर गई है; देखो, मैं पृथ्वी समेत उन्हें नष्ट कर दूँगा।' वे नष्ट कर दिए जाने वाले थे क्योंकि उन्होंने उस

पृथ्वी को दूषित कर दिया था जिसे परमेश्वर ने धर्मी लोगों के आनंद हेतु बनाया था।

‘जैसा नूह के दिनों में था,’ मसीह ने कहा, ‘वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा।’ और क्या ऐसा नहीं है? जो कोई भी दैनिक समाचारपत्रों को देखेगा, वह अपराधों की एक लंबी सूची देख सकता है—मद्यपान, चोरी, डकैती, गबन, हत्या। कभी-कभी पूरे परिवारों की हत्या कर दी जाती है, ताकि किसी मनुष्य की उन धन या वस्तुओं पर अधिकार पाने की इच्छा, जो उसकी नहीं हैं, पूरी हो जाए। वास्तव में संसार नूह के दिनों जैसा ही होता जा रहा है, क्योंकि लोग खुलेआम परमेश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना कर रहे हैं। Review and Herald, July 13, 1897.

यिर्मयाह अंतिम दिनों की परमेश्वर की उस प्रजा की पहचान कर रहा है जो सूर्य के सामने झुकने ही वाली है, और ऐसा करते हुए वह यह बताता है कि “बौछारें रोक ली गई हैं, और पछली वर्षा हुई ही नहीं; और तेरे माथे पर वेश्या का ललाट है, तू लज्जित होना नहीं चाहती।” अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा के “दुष्ट” लोग पछली वर्षा नहीं पा रहे हैं, और वे लज्जित होने से इनकार करते हैं, क्योंकि उनके विचार निरंतर बुरे हो गए हैं, जैसा कि नूह के इतिहास से दर्शाया गया है, और साथ ही यहजेकेल अध्याय आठ की दूसरी घृणित बात में वर्णित “चित्रों के कक्षों” से भी।

यिर्मयाह अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा के निर्लज्ज दुष्टों को इस ओर इंगित करता है कि वे उस "समय" "से" अपने "यौवन" के "मार्गदर्शक" की ओर "पुकार" करें। एडवेंटिज़्म के आरंभिक दिनों का मार्गदर्शक हबक्कुक की दो तालिकाएँ और उन पर दर्शाए गए रत्न थे। अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा के दुष्टों पर अनन्त मृत्यु लाने वाली उस दुष्टता से बाहर निकलने की एकमात्र आशा यही है कि उस परमेश्वर को पुकारा जाए जो आरंभ में मार्गदर्शक था, जो 1798 में "अंत के समय" पर पहुँचा।

पहले या तीसरे स्वर्गदूत के इतिहास में मुख्य प्रश्न यह है कि आप अन्तिम वर्षा को ग्रहण करते हैं या नहीं। 11 सितंबर 2001 को जब राष्ट्र आक्रोशित हो उठे, तब अन्तिम वर्षा आरंभ हुई।

उस समय, जब उद्धार का कार्य समापन पर होगा, पृथ्वी पर क्लेश आएँगे, और राष्ट्र क्रोधित होंगे, फिर भी उन्हें इस प्रकार नियंत्रित रखा जाएगा कि तीसरे स्वर्गदूत के कार्य में बाधा न पड़े। उसी समय 'परवर्ती वर्षा', या प्रभु की उपस्थिति से मिलने वाली ताज़गी, आएगी, ताकि तीसरे स्वर्गदूत की ऊँची आवाज़ को शक्ति मिले, और संतों को तैयार किया जाए कि वे उस अवधि में दृढ़ बने रहें जब सात अंतिम विपत्तियाँ उंडेली जाएँगी। प्रारंभिक लेखन, 85.

"अन्तिम वर्षा", जिसे "ताज़गी" भी कहा गया है, तब शुरू हुई जब राष्ट्र क्रोधित हुए, और उसी समय "उद्धार का कार्य" समाप्ति की ओर बढ़ने लगा। प्रकाशितवाक्य अध्याय सात के चार स्वर्गदूत एक लाख चवालिस हज़ार के मुद्रांकन के पूरा होने तक चार पवनों को रोके हुए हैं, और यहजेकेल अध्याय नौ में, उस कार्य को इस प्रकार दर्शाया गया है कि स्वर्गदूत उन पर चिह्न लगाते हैं जो यरूशलेम में किए जा रहे घृणित कामों के कारण आह भरते और विलाप करते हैं। 11 सितंबर, 2001 को स्वर्गदूतों ने एक लाख चवालिस हज़ार के ललाटों पर चिह्न लगाने के समापन का कार्य आरंभ किया।

तीसरे स्वर्गदूत का समापनकारी कार्य अंतिम वर्षा के उंडेले जाने के दौरान पूरा होता है, जिसे "पुनर्सफूर्ति" भी कहा जाता है, जो एक संदेश है।

जिनसे उसने कहा, यह वह विश्राम है जिससे तुम थके हुएों को विश्राम दिला सकते हो; और यह वह ताज़गी है; तो भी वे सुनना नहीं चाहते थे। यशायाह 28:12.

यशायाह में जिस संदेश को वे सुनने से इंकार करते हैं, वही हकलाती जिह्वाओं द्वारा दिया गया संदेश है, और वही 'पंक्ति पर पंक्ति' की पद्धति का प्रतिनिधित्व करने वाला कसौटी का संदेश है।

परन्तु उनके लिये यहोवा का वचन ऐसा हुआ: उपदेश पर उपदेश, उपदेश पर उपदेश; रेखा पर रेखा, रेखा पर रेखा; यहाँ थोड़ा, वहाँ थोड़ा; ताकि वे जाकर पीछे की ओर गिरें, और टूटें, और फँसें, और पकड़े जाएँ। इसलिए, हे ठट्ठा करनेवाली, जो यरूशलेम में इस प्रजा पर शासन करते हो, यहोवा का वचन सुनो। क्योंकि तुम ने कहा है, हमने मृत्यु के साथ वाचा बाँधी है, और अधोलोक के साथ हम समझौते में हैं; जब वह उमड़ती प्रचण्ड विपत्ति गुज़रेगी, वह हम तक नहीं पहुँचेगी; क्योंकि हमने झूठ को अपना शरणस्थान बनाया है, और असत्य के नीचे हमने अपने को छिपाया है। यशायाह 28:13-15.

प्रभु का वचन, जो विश्राम और ताज़गी (अंतिम वर्षा) का संदेश है, जिससे वे "जाते हैं, पीछे की ओर गिरते हैं, टूटते हैं, फँसते हैं और पकड़े जाते हैं," "उन उपहास करने वाले पुरुषों" को दिया गया है, "जो यरूशलेम में इस प्रजा पर शासन करते हैं।" यरूशलेम वह स्थान है जहाँ स्वर्गदूत उन पर चिह्न लगाते हैं जो आहें भरते और रोते हैं, और वे बुजुर्ग पुरुष जिन्होंने अपने दायित्व से विश्वासघात किया है, सबसे पहले गिरते हैं।

उद्धार का चिह्न उन पर रख दिया गया है जो 'किए जाने वाले सब घृणित कामों के कारण आहें भरते और रोते हैं।' अब मृत्यु का दूत निकल पड़ता है, जिसे यहजेकेल के दर्शन में वध करने के हथियार लिए हुए पुरुषों द्वारा दर्शाया गया है, जिन्हें यह आज्ञा दी गई: 'बूढ़ों और जवानों, दोनों को, कुँवारियों, छोटे बच्चों और स्त्रियों को पूरी तरह मार डालो; पर जिस किसी व्यक्ति पर चिह्न हो उसके निकट न आना; और मेरे मन्दिर से आरम्भ करना।' भविष्यद्वक्ता कहता है: 'उन्होंने उन प्राचीन पुरुषों से आरम्भ किया जो भवन के सामने थे।' यहजेकेल 9:1-6. विनाश का कार्य उन लोगों के बीच आरम्भ होता है जिन्होंने अपने आप को लोगों के आत्मिक रक्षकों के रूप में घोषित किया है। झूठे पहरेदार सबसे पहले गिरते हैं। न किसी पर दया की जाती है, न किसी को छोड़ा जाता है। पुरुष, स्त्रियाँ, कुँवारियाँ, और छोटे बच्चे साथ-साथ नाश हो जाते हैं। महान विवाद, 656.

हम 1989 में हुई ज्ञान-वृद्धि पर चर्चा अगले लेख में जारी रखेंगे।

"जो बाहरी रूप के नीचे तक देखता है, जो सब मनुष्यों के हृदयों को पढ़ता है, वह उन लोगों के विषय में, जिन्हें महान ज्योति प्राप्त हुई है, कहता है: 'वे अपनी नैतिक और आध्यात्मिक दशा के कारण न तो दुःखित हैं और न विस्मित।' हाँ, उन्होंने अपने ही मार्गों को चुन लिया है, और उनकी आत्मा उनकी घृणित वस्तुओं में प्रसन्न होती है। 'मैं भी उनके भ्रम को चुनूँगा, और जिन बातों से वे डरते हैं उन्हें उन पर ले आऊँगा; क्योंकि जब मैंने पुकारा, तब किसी ने उत्तर न दिया; जब मैंने कहा, तब उन्होंने न सुना; परन्तु उन्होंने मेरी आँखों के सामने बुराई की, और उसे चुना जिसमें मुझे प्रसन्नता न थी।' 'परमेश्वर उन पर प्रबल भ्रांति भेजेगा, ताकि वे झूठ की प्रतीति करें,' क्योंकि उन्होंने 'सत्य के प्रेम को ग्रहण न किया, जिससे उनका उद्धार होता,' 'वरन् अधर्म में आनन्द मानते रहे।' यशायाह 66:3, 4; 2 थिस्सलुनीकियों 2:11, 10, 12।

"स्वर्गीय शिक्षक ने पूछा: 'मन को भ्रमित करने वाला इससे बड़ा भ्रम और क्या हो सकता है कि आप यह दिखावा करें कि आप सही नींव पर निर्माण कर रहे हैं और कि परमेश्वर आपके कार्यों को स्वीकार करता है, जबकि वास्तव में आप बहुत-सी बातें सांसारिक नीतियों के अनुसार कर रहे हैं और यहोवा के विरुद्ध पाप कर रहे हैं? ओह, यह एक बड़ा छल है, एक मोहक भ्रम, जो मन पर अधिकार कर लेता है, जब वे लोग, जिन्होंने कभी सत्य को जाना है, भक्ति के बाहरी रूप को उसकी आत्मा और सामर्थ्य समझ बैठते हैं; जब वे यह मान लेते हैं कि वे धनी हैं और संपत्ति में बढ़ गए हैं और उन्हें किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं, जबकि वास्तव में उन्हें हर चीज़ की आवश्यकता है।'" टेस्टिमोनीज़, खंड 8, 249, 250.